

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

राष्ट्रीय भंडा तथा उसका प्रयोग

शि०

८

मं(८१)

६०



डी० एल० आनन्द राव

राष्ट्रीय मंडा

तथा उसका प्रयोग

श्री डी० एल० आनन्दराव

भूमिका लेखक

श्री सी० वी० पोनप्पा



मुद्रक तथा प्रकाशक
दि इलाहाबाद प्लाक वर्क्स लि०, जीरो रोड, इलाहाबाद ।

मूल्य ॥)

भूमिका

राष्ट्रीय भंडा प्रत्येक राष्ट्र का जीवन प्रतीक है। उसका फहराना प्रत्येक देशवासो में नए प्राण देश भक्ति की भावना तथा नृजन आशाएँ भर देता है। उसका सम्मान करना हरएक नागरिक का प्रथम कर्त्तव्य है।

हमारा देश सैकड़ों वर्ष की परतंत्रता के बाद १५ अगस्त १९४७ को स्वतंत्र हुआ है। हमने अपने राष्ट्रीय भंडे के सम्मान के लिए संघर्ष तथा बलिदान किया है आज देश के हरएक व्यक्ति के मन में इसे अपनाने की भावना उठी है। बूढ़े युवक और बच्चे यानी सारे देश ने इसे अपने हृदय से लगा कर प्रतीक्षा की कि भंडा सदा ऊँचा रहेगा इसकी शान अमर रहेगी।

यह एक नया वातावरण है जिससे कि समस्त देश गुजर रहा है। अतएव भंडे के प्रयोग तथा उसके सम्मान का पूरा-पूरा ज्ञान उस देशवासियों को जानना चाहिए ताकि उनका सही-सही सम्मान हो सके। अतएव श्री डी० एल० आनन्दराव ने इस पुस्तक द्वारा भण्डे का इतिहास, उसका सम्मान तथा उसके प्रयोग पर विस्तार से प्रकाश डाला है। आशा है कि यह उपयोगी पुस्तक सबको भंडे के ज्ञान से पूर्ण परिचित कराने में सफल होगी।



Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो शब्द

भारतीय स्वतंत्रता का प्रतीक राष्ट्रीय तिरंगा झंडा भारतवासियों के लिए महान आदर का चिन्ह है। राष्ट्रीय झंडे के लिये देश के लाखों लोग जेल गये हैं और उसकी मर्यादा की रक्षा कितने ही लोगों ने अपने प्राणों का बलिदान देकर की है। इसलिए आज हमें राष्ट्रीय झंडे के प्रति सम्मान प्रगट करने के नियमों से परिचित होने का अधिक आवश्यकता है। झंडे के तीन रंग हमारी तपस्या और त्याग, बलिदान और वीरता, सत्व और शान्ति के प्रतीक हैं। और यही भारत का संसार के अन्य देशों के लिए सन्देश है माननीय पंडित जवाहर लाल नेहरू ने इसीलिये विधान सभा में कहा था, “इस झंडे के द्वारा स्वतंत्रता, आशा और बन्धुत्व का सन्देश देकर भारत सारे संसार का मित्र होकर रहना चाहता है।”

आज विश्व एक संघर्ष के बीच से होकर गुजर रहा है। सारी मान्यताएँ बदल रही हैं और समता की ओर संसार बढ़ रहा है लोकतंत्र की स्थापना के लिए देश-देश के लोग प्रयत्नशील हैं। हमें भी विश्व बंधुत्व, समता और लोकतंत्र को स्थापना के लिये कार्य करना है। हमारा राष्ट्रीय झंडा इस सङ्कट काल में हमें कर्तव्यों का ध्यान दिलाता रहेगा। इसलिए हमें इसे सम्मान पूर्वक फहराना चाहिए और इसके गौरव की रक्षा करनी चाहिए।

प्रस्तुत पुस्तक की तैयारी में मैंने कई लेखकों की रचनाओं से लाभ उठाया है। इसलिए उन्हें धन्यवाद देता हूँ और आशा करता हूँ कि जिस उद्देश्य से यह पुस्तक प्रकाशित हो रही है, वह अवश्य पूरा होगा।

हिन्दुस्तान स्काउट असोसिएशन,

प्रयाग
सितम्बर १९४८

डी० एल० आनन्दराव

विषय-सूची

- १--देश के झंडे का गौरव
- २--झंडे का संक्षिप्त इतिहास
- ३--राष्ट्रीय झंडे का निर्माण और उसकी वनावट
- ४--झंडा, पताका और निशान
- ५--झंडा पहनाने की विधियाँ
- ६--झंडा-गान
- ७--राष्ट्रीय झंडे का सम्मान
- ८--झंडे का प्रयोग के नियम
- ९--झंडा-निषेध
- १०--उपसंहार
- ११--सहायक पुस्तकों की सूची

भंडे का गौरव

प्रत्येक देश का एक भंडा होता है। वह भंडा उस देश का गौरव और मान का प्रतीक होता है। जब तक उस देश में शक्ति होती है वह भंडा शान से लहराता है। जब देश शक्तिहीन और गुलाम हो जाता है तो उसे अपना भंडा फहराने का अधिकार नहीं रहता।

भारतवर्ष को जब स्वतंत्रता मिली तो उसके साथ उसे यह अधिकार भी मिला कि उसका राष्ट्रीय भंडा उन सभी स्थानों पर लहराएगा जहाँ अंग्रेजों का यूनियन जैक था।

भारतीय जनता को राष्ट्र-पद पर पहुँचाकर उसे भंडे के रूप में अपनत्व का प्रतीक देने का श्रेय विश्व धर्म बापू को ही है। प्रथम महायुद्ध के बाद जब भारत को स्वाधीनता के स्थान पर जलियान वाले बाग का हत्याकांड और रौलट ऐक्ट उपहार-स्वरूप मिला तब दास्त्व की जंजीरो से जकड़े हुये भारत की आत्मा में भी भर्यकर हलचल उत्पन्न हुई। गांधी जी ने व्यथित भारत को धैर्य और आत्म-सम्मान का ज्ञान दिया। उन्होंने चरखा मंडित लाल, हरा और सफेद रङ्ग का तिरङ्गा भंडा राष्ट्र को प्रदान किया, जिसमें देश ने अपना खोया हुआ वैभव पाया।

भंडे का संक्षिप्त इतिहास

सन् १८५७ में राष्ट्रीय भण्डा हरा और उस पर रूपहला सूरज था रानी लक्ष्मीबाई तथा नाना धुन्धा पन्त इसी भण्डे के नीचे लड़े थे।

१८५७ की क्रान्ति भारतीय स्वतंत्रता के लिये प्रथम प्रयास था।

लेकिन जब हिन्द असफल हुआ तो ब्रिटिश राज ने अपनी जंजीरों को और अधिक कसना शुरू किया और तब हिन्द को यूनियन जैक राष्ट्रीय झंडे के रूप में मिला। तब से १५ अगस्त १९४७ ई० तक अपने देश में यूनियन जैक फहराता रहा है। इस सम्बन्ध में यह भी उल्लेखनीय है कि सन् १८८५ ई० में जब कांग्रेस का संगठन हुआ उस समय यूनियन जैक ही फहराया गया और १९१५ ई० तक कांग्रेस के अधिवेशनों में यूनियन जैक ही फहराया जाता रहा।

लेकिन देश की क्रान्तिकारी शक्तियाँ अंगरेजी राज को खत्म कर देना चाहती थी। १९०५ ई० में वंग-भंग के समय क्रान्तिकारी नवयुवकों ने राष्ट्रीय झंडा फहराना चाहा किन्तु वे असफल रहे। विदेशों में विशेषकर इंग्लैंड और फ्रांस में जो भारतीय विद्यार्थी रहते थे उन्हें दासता के कारण अमान सड़ना पड़ता था। स्वतंत्र देश के नागरिकों के बीच नवयुवक भारतीय लज्जा से मस्तक नीचा कर लेते थे। जब कोई राष्ट्रीय दिवस तथा अन्य उत्सव मानने का अवसर आता, उस समय इनके पास कोई राष्ट्रीय झंडा नहीं होता था जिसे वे फहराते। वे उस समय यूनियन जैक इसलिए नहीं फहराते थे कि यह उनकी गुलामी का चिह्न था। इन परिस्थितियों के बीच सन् १९०६ में इंग्लैंड में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय झंडे की रूप-रेखा निश्चय की। यहीं यह श्याम जी कृष्ण वर्मा और मेडम कामा आदि के सुझाव से बना। इन नव जवानों के झंडे में तीन रङ्ग रखे। ऊपर लाल, बीच में सफेद और नीचे हरा रङ्ग था। झंडे के दाईं ओर सूरज और बाईं ओर चांद हरी पट्टी पर बनाया गया था। सफेद पट्टी पर 'वन्देमातरम' लिखा गया। और लाल पर आठ तारे बनाए गये जो उस समय के आठ प्रान्तों के प्रतीक थे। इस प्रकार तिरंगे का प्रथम रूप निश्चित किया गया।

भारत में राष्ट्रीय झंडा बनाने के प्रयत्न में श्रीमती ऐनी बेसेन्ट ने लाल और हरे रङ्ग का झंडा बनाया। लाल रङ्ग हिन्दुओं का था और

इरा रंग मुसलमानों का, क्योंकि भारत में हिन्दू मुस्लिम एकता की बड़ी आवश्यकता थी। होमरूल आन्दोलन के सिलसिले में जब डाक्टर

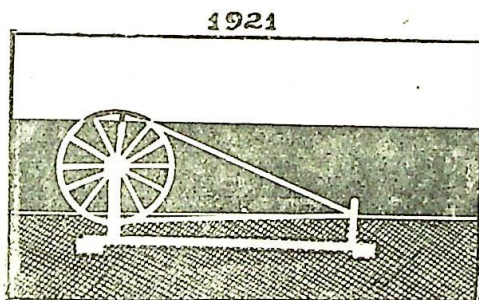


वेसेन्ट, जार्ज ग्रन्डेल और श्री वी० पी० वाडिया नजर-बन्द किये गये तब इन लोगों ने इस झंडे को जेल में

प्रथम बार फहराया था।

लेकिन जब भारतीय राजनीति में गांधी जी आये, उस समय भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम ने नया रूप धारण किया। गांधी जी ने

असहयोग आन्दोलन आरम्भ किया। यूनिशन जैक पहले ही हट चुका था, लेकिन अब दूसरे झंडे की आवश्यकता थी जो देश की आजादी की



लड़ाई में लहराता। इसलिये राष्ट्रीय झंडे के सम्बन्ध में कांग्रेस ने विचार किया और पंजाब के लाला हंसराज ने झंडे की रूप रेखा तैयार की। लालाजी ने झंडे में लाल व हरा रंग रखे जो क्रमशः हिन्दुओं और मुसलमानों को मान्य थे। सन् १९२० का झंडा रवीन्द्र नाथ ठाकुर के बड़े भाई द्विजेन्द्र नाथ ठाकुर की कल्पना है। उसमें गांधी जी की

सलाह से चरखा जोड़ा गया। लेकिन जब गांधी जी ने देखा तो कहा कि सफेद रंग अन्य धर्म वालों के लिये रहना चाहिये। इसलिये लाल सफेद और हरे रङ्ग का तिरङ्गा झंडा बनाया गया। साथ ही झंडे के बीच में चरखा बनाया गया जो भारत के गरीब किसान। मजदूरों का चिह्न था। विजयवाड़ा में कोई कांग्रेस अधिवेशन नहीं हुआ।

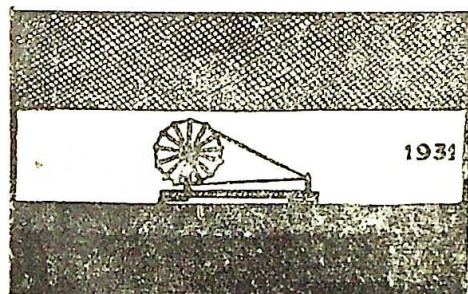
सन् १९२० का कांग्रेस अधिवेशन नागपुर में हुआ। मार्च १९२१ में विजयवाड़ा में आल इंडिया कांग्रेस कमेटी की बैठक हुई। इस झंडे को गांधी जी ने विजयवाड़ा के कांग्रेस अधिवेशन में उपस्थित किया लेकिन किन्हीं कारणों से कांग्रेस ने इस झंडे को अधिकार रूप में स्वीकार नहीं किया। परन्तु व्यावहारिक रूप से सन् १९३१ तक यही झंडा कांग्रेस का झंडा बना रहा। कांग्रेस के आन्दोलन इस झंडे के नीचे हुए। इस झंडे के लिए कांग्रेस ने सत्याग्रह भी किया। सन् १९२३ को १३ अप्रैल की घटना में कांग्रेस के स्वयंसेवक इस झंडे को लेकर नागपुर की सिविल लाइन्स में जाना चाहते थे। लेकिन पुलिस ने रोक लगा दी। फिर क्या था कांग्रेस के स्वयंसेवकों ने कहा कि हम झंडा लेकर जरूर जायेंगे। इतना ही नहीं सारे देश में झंडे की शान के लिए एक लहर दौड़ गई और १८ जुलाई सन् १९२३ को सभी भारतवासियों ने तिरंगे को पहनाया और कितने ही लोग राष्ट्रीय झंडे के साथ नागपुर पहुंचे और सिविल लाइन्स में घुस गये। पुलिस ने गिरफ्तारियाँ कीं, और दमन का चक्र चल पड़ा। किन्तु जनता की वाढ़ पुलिस कब रोक सकती थी। सरदार वल्लभ भाई पटेल इस सत्याग्रह का नेतृत्व कर रहे थे। इसलिए पुलिस ने हार मान कर अपना हुक्म वापस ले लिया। इस प्रकार यह झंडा सत्याग्रह बड़ी सफलता से समाप्त हुआ।

पंडित मोतीलाल नेहरू नवम्बर सन् १९२२ में जबलपुर गये वहाँ जबलपुर म्युनिसिपल बोर्ड ने उन्हें मान पत्र देते हुए तिरंग

भंडा फहराया। इस पर पार्लियामेंट में प्रश्न पूछा गया और लार्ड बर्केनहेड ने यह आश्वासन दिया कि भविष्य में कोई म्युनिसिपैल्टी यह बात न करने पाएगी।

१३ मार्च १९२३ को जब चक्रवर्ती राजगोपालाचारी और डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद जबलपुर गये तो म्युनिसिपैल्टी ने फिर मान पत्र के साथ राष्ट्रीय भंडा फहराने का निश्चय किया। इस पर म्युनिसिपैल्टी को फौज और पुलिस से घेर लिया गया और अभिनन्दन पत्र न दिया जा सका।

सन् १९३१ के कराची अधिवेशन में कांग्रेस ने देश का एक भंडा नियत करने का निश्चय करने के उद्देश्य से नए भंडे का निर्माण करने के लिये एक कमेटी बनाई। इस कमेटी ने जिस भंडे की रूपरेखा बनाई



उसमें केसरिया, सफेद और हरे रंग थे। बीच में सफेद रंग था जिस पर चरखा बना था जो सन् १९३१ के ३१ अगस्त को समस्त भारत में फहराया गया।

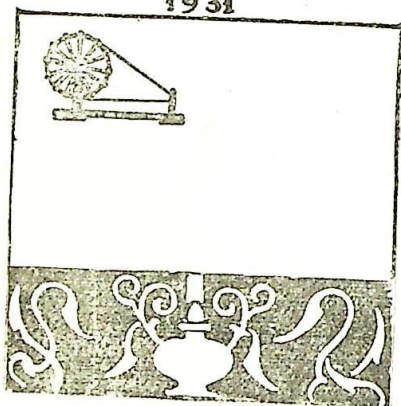
यह भंडा तब से १४ अगस्त १९४७ तक भारत का राष्ट्रीय भंडा रहा।

राष्ट्रीय भंडे का निर्णय और उसकी बनावट

स्वतंत्रता प्राप्त हो जाने पर राष्ट्रीय भंडे का फिर प्रश्न उठा और कई बातें सामने आईं। कुछ लोग कहने लगे कि भंडा ऐसा हो कि

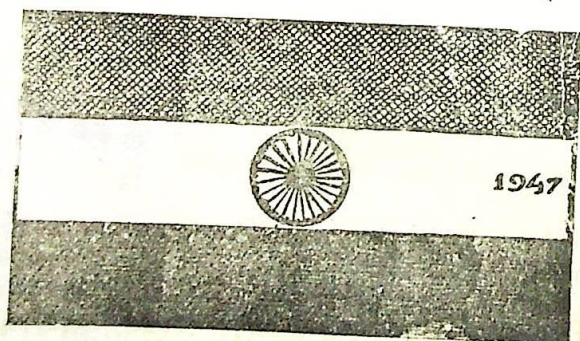
जिसे रजवाड़े तथा दूसरे वर्ग के लोग भी स्वीकार करें। तिरङ्गा झंडा तो एक राजनीतिक दल का झंडा है। वह राज्य और देश का झंडा

1931



कैसे बन सकता है? ये मतवाले कदाचित्त उस समय को भूल गए थे कि स्वतंत्रता का संग्राम भी इसी तिरंगे के नीचे लड़ा गया था। तिरंगे झंडे के लिए हजारों व्यक्तियों ने त्याग किया था और फिर जब स्वाधीनता मिली तो क्यों न तिरंगे को स्वाधीन भारत का राष्ट्रीय झंडा

माना जाता। चरखे के स्थान पर अशोक चक्र के चिन्ह को रखते हुए स्वतन्त्र भारत की सरकार ने तिरंगे झंडे को देश का राष्ट्रीय झंडा



घोषित किया। चक्र सारनाथ के अशोक स्तम्भ से लिया गया है। अशोक स्तम्भ ईसा से ३०० वर्ष पूर्व बना था। महाराज अशोक ने अहिंसा, शान्ति, न्याय और धर्म के सिद्धान्तों पर अपना साम्राज्य

(७)

स्थापित किया था। इस प्रकार राष्ट्रीय झंडे पर जो चक्र है उसका सांस्कृतिक महत्व है। वह हमारे अतीत के गौरव की याद दिलाता है।

चक्र का यदि आधुनिक अर्थ लिया जाय तो यह प्रगति का प्रतीक है। वर्तमान वैज्ञानिक काल में जब कि तीव्र गति से संसार बढ़ रहा है और नये नये आविष्कारों द्वारा समाज में क्रान्तिकारी परिवर्तन उपस्थित हो रहे हैं, उस समय यह चक्र हमें याद दिलाता है कि गति ही जीवन है। इसलिये आगे बढ़ते चलो, बढ़ते चलो !

इस चक्र में जो शालाकाएं हैं वे सूर्य कि किरणों के समान हैं। अतः ये जीवन में प्रकाश के स्वरूप हैं और हमें सदा इस बात के लिए प्रोत्साहित करती हैं कि हम अन्धकार से प्रकाश की ओर, असत्य से सत्य की ओर और मृत्यु से अमरता की ओर अग्रसर हों।

२२ जुलाई सन् १९४७ को विधान परिषद में झंडा प्रस्तुत करने हुए माननीय पं० जवाहरलाल नेहरू ने अत्यन्त मार्मिक शब्दों में कहा था—“यह झंडा स्वतंत्रता का सच्चा प्रतीक है। यह हमारे लिए ही नहीं बल्कि सबके लिए स्वतंत्रता का सूचक है। जहाँ भी यह झंडा जायेगा, इसके द्वारा स्वतंत्रता, आशा, और बन्धुत्व का संदेश हम संसार के विभिन्न देशों में पहुँचायेंगे। इस झंडे के द्वारा हम यह संदेश देंगे कि भारत सारे संसार का मित्र हो कर रहना चाहता है। जो देश गुलाम है उन्हें आजाद होने में सहायता पहुँचाना चाहता है। यह झंडा आजादी दोस्ती, आशा और बन्धुत्व का प्रतीक है। यह झंडा हमारा राष्ट्रीय गौरव है।

झंडा, पताका और निशान

झंडा पहचाने के सम्बन्ध में सबसे पहले झंडा, पताका और निशान के अंतर को समझना चाहिए। झंडा शब्द राष्ट्रीय झंडे के लिये प्रयोग होता है। पताका उस झंडे को कहते हैं जिसे पैदल सेना अपने साथ लेकर चलती है। फिर सेना में रिसाला होता है। उसका भी

(८)

झंडा होता है जिसे निशान (Stangard) कहते हैं । जहाजों पर तथा मैदान में बल्लियाँ गाड़ कर झंडा (Hoist) फहराया जाता है । राष्ट्रीय झंडे के लिए केवल झंडा शब्द का प्रयोग करते हैं ।

झंडा फहराने की विधियाँ

झंडा फहराने के लिए पहले झंडे को लपेट कर ऊपर दंड की ऊँचाई पर रखते हैं । फिर झंडा फहराने वाली रस्सी खींचकर बांधी जाती



है इससे झंडा रस्सी के फंदे से निकलकर फहराने लगता है । इसके लिए झंडे के लपटने का तरीका मालूम होना चाहिए । झंडा लपेटने का तरीका बड़ा आसान है । झंडे को फैलाकर लम्बाई के अनुसार दो बार दुहरा देना चाहिये । इसके बाद चौड़ाई के अनुसार दो बार दुहरा देना चाहिये और उसे धीरे २ लपेटना या चुनना चाहिये । झंडे की रस्सी को बल्ली में बाँध छोटी गड़ारी चुल्ले में डाल देना चाहिये जो रस्सी चुल्ले में डाली गई है उसके एक सिरे में झंडे का ऊपरी कोना बंधा होना चाहिये और दूसरे सिरे

से भण्डे का नीचे का कोना बाँधा रहना चाहिये। भण्डे के कोने को बाँधते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि वे भण्डे के दाहिनी ओर के कोने हैं। इसके बाद रस्सी के नीचे वाले भाग के लपेटे हुए भण्डे को दो बार लपेट देना चाहिये और उसमें एक फंदा खोस देना चाहिये। अब सावधानी से रस्सी में इस प्रकार बंधे भण्डे को ऊपर खींचना चाहिये जिससे कि खोसा हुआ फंदा न निकल पड़े। भण्डा फहराने के लिये लटकी हुई रस्सी को बल्लो में बाँध देना चाहिये और जब भण्डा खोलने का समय आये तो रस्सी के ऊपरी भाग को तेजी के साथ खींच देना चाहिये जिससे कि फंदा बनाकर भण्डे में खोसा गया है। भण्डा बढ़ाने की दूसरी विधि भी है। खुले हुये भंडे को रस्सी में बांध कर ऊपर चढ़ाने के लिये तैयार कर लिया जाता है। जमीन से लगभग ५ फुट ऊँचाई पर लटका दिया जाता है और फिर उसे भण्डा फहराने वाला व्यक्ति रस्सी को खींचकर धीरे धीरे ऊपर चढ़ाता है। इस समय सब लोग सनामी देते हैं; यदि बैड बाजा वहाँ हो या विगुलर हो तो वह सलामी बजाते हैं। जैसे ही भण्डा ऊपर चढ़ चुकता है बैड या विगुल और पास खड़े व्यक्तियों की सलामी समाप्त हो जाती है और सब सावधान की हालत में खड़े हो जाते हैं।

भण्डा बनाने में तीन प्रकार के कपड़े का प्रयोग किया जा सकता है, अर्थात् सूती, रेशमी और ऊनी। ऊनी कपड़े के बने हुये भण्डे फहराने में सबसे उत्तम होते हैं। उन्हें फहराने की हालत में लाने के लिये लपेटने और उसमें रस्सी का फंदा लगाकर लटकाने और फिर रस्सी खींचकर उन्हें खोलने और फहराने में उत्तम फल प्राप्त होते हैं। ऊनी भण्डा बनाने में कुछ असुविधा रही है इसलिये हमारे देश में अधिकतर रेशमी तथा सूती भण्डों का ही प्रयोग होता है। भण्डे की बनावट के सम्बन्ध में कुछ आवश्यक जानकारी की बातों का विवरण नीचे दिया जाता है।

भण्डे में तीन रङ्गों की पट्टियों की सजावट इस प्रकार होगी—

(१०)

१—केसरिया (गहरा)

ऊपर

सफेद

बीच में

गहरा हरा

नीचे

२—बनावट :—बीच वाली सफेद रङ्ग की पट्टी के बीच बीच में पट्टी की पूरी चौड़ाई के नाप के बराबर गहरे नीले रङ्ग का अशोक चक्र होगा। चक्र में शलाकाओं की संख्या २४ होनी चाहिये। भण्डे की लम्बाई और चौड़ाई का अनुपात ३:२ होगा।

३—रङ्ग का अभिप्राय।

केसरिया

साहस और त्याग का प्रतीक है।

सफेद

सत्य और अहिंसा का प्रतीक है।

हरा

उत्साह और वीरता का प्रतीक है।

चक्र

चरखे का प्रतिनिधि हैं और गरीब किसान

मजदूर की आशा का चिन्ह है।

४—जीर्ण भण्डा

नोट :—याद रखिये कि यदि भण्डे का रङ्ग खराब हो गया हो या भण्डा फट गया हो तो उसे वैसा ही नहीं रखना चाहिये और न तो इधर उधर फेंक देना चाहिये वरन् उसे सम्मान पूर्वक रख देना चाहिये।

भण्डा गान

भण्डे के इतिहास की भांति भण्डा गान की भी कई कहानियां हैं। सर्वप्रथम स्वर्गीय श्री० गणेश शंकर विद्यार्थी ने अनुभव किया था कि राष्ट्रीय भण्डे का एक गीत होना चाहिये। सन् १९५२ में जब कि काँग्रेस का वार्षिक अधिवेशन कानपुर में होने वाला था तब विद्यार्थी जी ने अपने एक शिष्य श्री० श्यामलाल से एक भण्डा गान लिखने के लिये कहा। श्यामलाल जी ने भण्डा गान लिखने की कोशिश की, पर वे असफल रहे। एक दिन स्वर्गीय श्री गणेश शंकर विद्यार्थी ने श्यामलाल

पार्षद जी से चिढ़ कर कहा 'यदि तुम दूसरे दिन गीत लिखकर नहीं दिखाओगे तो अच्छा नहीं होगा।' बेचारे पार्षद जी रात भर सो न सके, किन्तु जब प्रभात हो रहा था उस समय एकाएक उन्हें पंक्ति याद आई—“विजयी विश्व तिरङ्गा प्यारा” और फिर इसके बाद कविता चल पड़ी, गीत पूरा हो गया। सवेरा होते ही विद्यार्थी जी के आदमी पार्षद जी के पास पहुँचे और झण्डा गान माँगने लगे। पार्षद जी ने जो गीत लिखा था उसे चुपचाप दे दिया। इस गीत को विद्यार्थी जी ने श्री पुरुषोत्तम दास टंडन को दिखाया। टंडन जी ने उसमें कुछ संशोधन किया। इस झण्डा गान को सर्वप्रथम पं० जवाहर लाल नेहरू ने फूल बाग, कानपुर की सभा में गया था और इसका प्रकाशन सबसे पहले 'प्रताप' में हुआ था। परन्तु सबसे मजेदार बात तो यह थी कि केवल कुछ ही लोगों को मालूम था कि झण्डा गान के कवि श्री पार्षद हैं। १९३१ में नमक कानून सत्याग्रह आन्दोलन चला और श्री श्यामलाल पार्षद पकड़े गये। तब दैनिक प्रताप में उनका परिचय देते हुये प्रकाशित हुआ कि झण्डा गान के कवि श्री पार्षद जी पकड़े गये। स्वतन्त्रता प्राप्त होने के पश्चात् पार्षद जी ने झण्डा गान में आवश्यक परिवर्तन किया है। झण्डा गान का नवीन परिवर्तित रूप इस प्रकार है।

विजयी विश्व तिरङ्गा प्यारा

झण्डा ऊँचा रहे हमारा !

देश भक्ति दरसाने वाला

वीरों को हराने वाला ।

मातृभूमि का तन मन सारा

झण्डा ऊँचा रहे हमारा ॥

प्रजातंत्र के नव सृजन में।

क्षय क्षय जोश बढ़ जन जन में

क्रापी शत्रु देखकर मन में।

मिट जाये मय संकट सारा ।
 भंडा ऊँचा रहे हमारा ॥ २ ॥
 इस भण्डे के नीचे निर्भय ।
 होवे महा शक्ति का संचय ।
 बोलो भारत माता की जय
 राष्ट्र सवल हो ध्येय हमारा ।
 भंडा ऊँचा रहे हमारा ॥ ३ ॥
 आओ प्यारे वीरो आओ ।
 राष्ट्र-ध्वजापरबलि-बलिजाओ
 एक साथ सब मिलकर गाओ
 प्यारा भारत देश हमारा ।
 भण्डा ऊँचा रहे हमारा ॥ ४ ॥
 शान न इसकी जाने पावे
 चाहे ज्ञान भले ही जावे ।
 मानव मात्र मुक्त हो जावे
 तब होवे प्रण पूर्ण हमारा ।
 भंडा ऊँचा रहे हमारा ॥ ५ ॥

अभी यह परिवर्तित भंडा गान राष्ट्रीय सरकार द्वारा स्वीकृत नहीं हुआ है, किन्तु राष्ट्रीय भंडे के गौरव के इस गीत में वही भावनाएँ निहित हैं जिन्हें भंडे के तीन रङ्ग और चक्र व्यक्त करते हैं ।

भंडे का सम्मान

राष्ट्रीय ध्वजा ही किसी देश की शान एवं प्राण होता है । उसकी इज्जत से ही देश की इज्जत होती है इसलिये राष्ट्रीय भण्डे का उचित सम्मान करना हमारा सबसे बड़ा कर्तव्य है । इसके मान

की रजा अपने प्राणों की आहुति देकर भी करनी चाहिये। जब तक किसी राष्ट्र का झन्डा रणक्षेत्र में ठाट से लहराता है तब तक उस देश की जीत समझी जाती है और मरते मरते सेनिकों के हृदय में उसे देख कर आगे बढ़ने का प्रोत्साहन मिलता है। परन्तु जब झन्डा झुक जाता है या गिरा दिया जाता है तो उस देश की पराजय समझी जाती है। अतः झन्डे का उचित रूप से सम्मान करना जानना एक आवश्यक बात है।

व्यक्तिगत रूप में

जब प्रातःकाल या सायंकाल झन्डा चढ़ाया और उतारा जाता हो तो तुरन्त अपने स्थान पर रुककर सावधान की दशा में खड़ा हो जाना चाहिए और जब तक झन्डा चढ़कर झन्डे के ऊपरी भाग तक न पहुँच जाय वा उतारते हुये जब तक वह नीचे न आ जाय तब तक झन्डे की ओर मुँह करके सावधान की दशा में खड़े रहना चाहिये।

किसी राष्ट्रीय उत्सव या विशेष अवसर पर झन्डे को फहराता हुआ देखें तो उसे उचित सलामी अवश्य दें।

सामूहिक रूप में

जब स्काउट दल; सैनिक या पुलिस इत्यादि के दस्ते झन्डा अवरोहण झन्डावतरण के समय एकत्रित होते हैं तो यह कार्य बड़े ही समारोह व मानपूर्वक करते हैं प्रत्येक टोली या टुकड़ी (Regiment रेजीमेन्ट) का झन्डा उसके साथ होता है इस अवसर पर वे झन्डे राष्ट्रीय झन्डे के सम्मान में झुका दिये जाते हैं।

इसी प्रकार मार्च पास्ट करते हुये भी जब कोई दल राष्ट्रीय ध्वजा के समीप आता है तो वह अपने झन्डे को राष्ट्रीय ध्वजा के सामने झुकते हुये सलाम देता है केवल अंगुष्ठा ही सलाम करता है और शेष लोग बायें या दाहिने निगाह करके चलते हैं जैसा कि उनको आदेश

(१४१)

मिलता है। भण्डे नीचे करने पर सलामी देने का आदेश राष्ट्रीय भण्डा के बाईं ओर दस गज के अन्तर से ही दे दिया जाता है और राष्ट्रीय भण्डा के दायीं ओर दस गज तक निकल जाने के बाद भण्डा ऊपर करने और सलामी समाप्त करने का आदेश दिया जाता है।

किसी राष्ट्रीय उत्सव या विशेष अवसर पर रस्मिया तौर पर भण्डे का सम्मान करने के लिये इस प्रकार कार्य किया जा सकता है। — भण्डे के दण्ड को रंग विरंगे रंग (पेन्ट) से खूब सजाना चाहिए। इसको खड़ा करने में सहायक तीन रस्सियों का अशोक की पत्तियों और भण्डियों से सजाया जाय। ॐ भण्डा लपेटते समय उसमें फूलों की पंखड़िया भर दी जाय ताकि खोलने के समय फूलों की वर्षा हो। भण्डे के दंडे के नीचे हिस्से के चारों ओर सुन्दर और आकर्षक अल्पना बनायी जाय। अल्पना में चावल, आटा, मसूर की दाल, जौ, बुरादा व नाना प्रकार के रंग विरंगे अनाज प्रयोग में लाये जाते हैं और उनसे रंग विरंगी सुन्दर चित्रकला प्रदर्शित की जाती है—चावल के आटे, खड़िया और गेरू की सहायता से घड़ों पर भी इसी प्रकार एक पवित्र और शोभायमान दृश्य :पस्थित हो जाता है।

विभिन्न दलों के लोग अर्ध चन्द्राकार या वर्गाकार में नियत स्थानों पर खड़े हो जाते हैं और अनेक नायक और भण्डा वदर अपने अपने दलों के सामने खड़े होते हैं और बैड या विगुल की सलामी के साथ भण्डा खुलता है उस अवसर पर कमान्डर के आदेश और हाथ के संकेत के साथ बैड वजता है और उसी के अनुसार सब दलों के भण्डा को भुकाया जाता है भण्डा के नीचे आने पर कमान्डर बहते हैं। “भारत माता की” तब भण्डे भुकाने वाले और शेष उपस्थित दलों के सदस्य ऊँचे स्वर में “जय” का निनाद करते हैं। और “जय” के शब्द के साथ ही भण्डे वदर अपने अपने भण्डों को ऊपर

ॐ अब यह प्रथा प्रायः बन्द कर दी गई है।

उठा कर उनको असली दशा में लाते हैं तीन बार उत्साह और ऊँची गर्जना के साथ किया जाना चाहिये ।

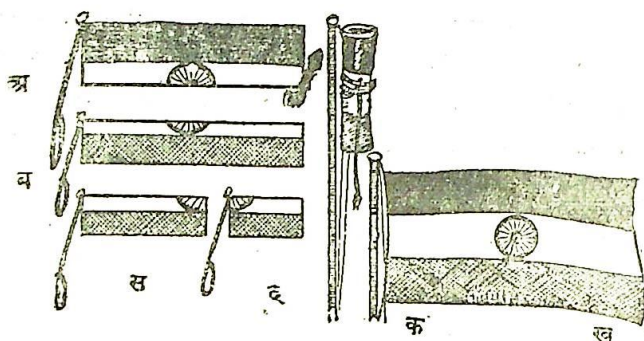
इस सम्बन्ध में यह आवश्यक और याद रखने योग्य बात है कि राष्ट्रीय झण्डा कभी किसी दशा में भी नहीं झुकेगा और उसके आलम बर्दार किसी को सलाम नहीं करेंगे । फिर गाने वालों की एक टोली झण्डा गान गाकर झण्डे की मान मर्यादा को उच्च शिखर पर पहुँचाती है ।

झण्डे का सम्मान करने का एक तरीका और भी है । दल को दो पंक्तियों में अपने सामने खड़ा कर दिया जाता है और इसके बाद राष्ट्रीय झण्डा दोनों पंक्तियों के बीच में से ले जाया जाता है । इस समय दल के सभी सदस्य झण्डे को अपनी सलामी (Salute) देते हैं । दूसरा तरीका यह है कि दल को अर्द्ध चन्द्राकार में खड़ा कर देते हैं और झण्डा दल के बीच में लहराता रहता है । इसके बाद बारी बारी से प्रत्येक सदस्य एक पग आगे बढ़ कर झण्डे को सलामी (Salute) देता है और फिर एक कदम पीछे हट कर पंक्ति में सम्मिलित हो जाता है ।

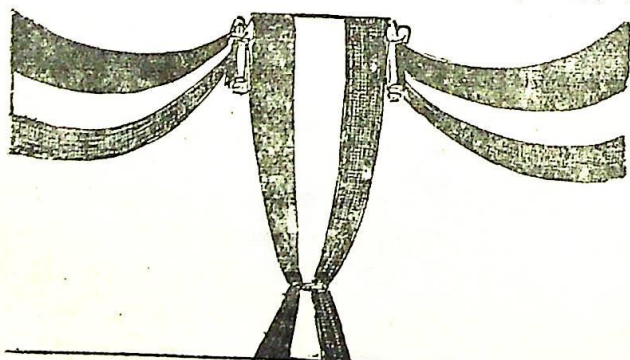
झण्डे के प्रयोग के नियम

गतवर्ष स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर देश के कोने कोने में राष्ट्रीय झण्डा फहराया गया । यह उत्साह इतना बढ़ गया कि स्वतन्त्रता दिवस के बाद भी लोग झण्डे का प्रयोग बिना समझे बूझते रहे । इसलिए कहीं तिरंगा विवाह शादी के मौके पर टाँगा गया तो कहीं दीवाल पर बनाया गया । किसी ने अपनी इमारत पर तिरङ्गा फहराया तो फिर उसके बाद उसकी खबर ही न ली । फल यह हुआ कि झण्डे का रंग उड़ गया और झण्डा फट गया । इस प्रकार अनेक स्थलों पर तिरंगे झण्डे के स्थान पर एक चिथड़ा फहराता हुआ दिखाई देने लगा बहुत

से लोगों को यह भी नहीं मालूम कि कितने बड़े दण्ड में कितना बड़ा झण्डा लगाया जाता है। इसलिए हमें लम्बे लम्बे बाँसों में



छोटे छोटे झण्डे ही दिखाई पड़ते हैं। तिरंगे के 'प्रेम' ने कुछ लोगों को घर में तिरंगा पर्दा टाँगने के लिये प्रोत्साहित किया और कुछ स्त्रियों को तिरंगी धोती पहनने के लिये। इस प्रकार चारों

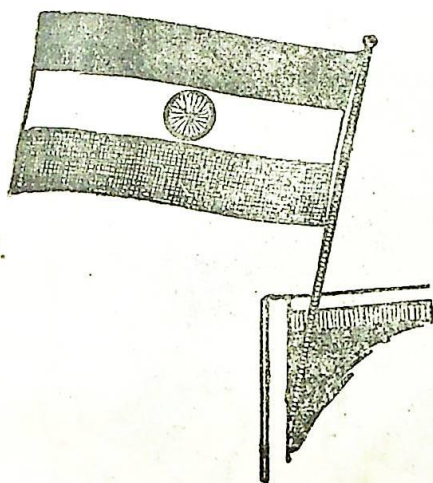


और राष्ट्रीय झण्डे का उलटा सीधा प्रयोग होने लगा जिसे देख कर दुःख होता है। इस दुरुपयोग को रोकने के लिए सब से पहले मद्रास प्रान्तीय सरकार ने आज्ञा जारी की। निम्नलिखित नियम झण्डे

(१७)

के योग के लिए निश्चित किये गए हैं जो कि सर्वमान्य और प्रचलित हैं।

१— झंडे को सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक फहराना चाहिये। झण्डा फहराने के अवसर पर सरकार द्वारा घोषित राष्ट्रीय छुट्टियाँ



ऐतिहासिक और विशेष उत्सव होंगें। झण्डा फहराने के समय इस बात का ध्यान रक्खा जाय कि झण्डे का ऊपरी भाग दंड के ऊपर के नोक तक जाय और वह तेजी के साथ खींचा जाय और फिर खुल कर फहराने लगे। झण्डे को धीरे धीरे उतारा जाय और यह कार्य आवश्यक सम्मान और विधि के

साथ किया जाय। जब झण्डा उतारा जाता हो या रास्ते में ले जाता हो उस समय होशियार की हालत में खड़ा होना चाहिये और जो किसी सस्था की वर्दी में हो उन्हें अपनी सलामी देना चाहिये।

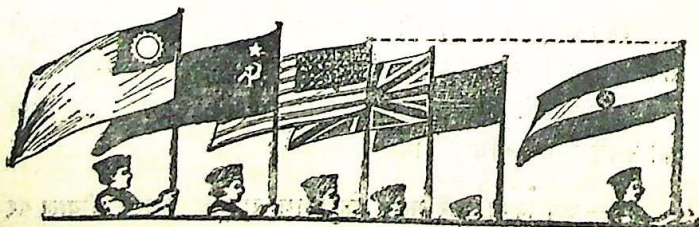
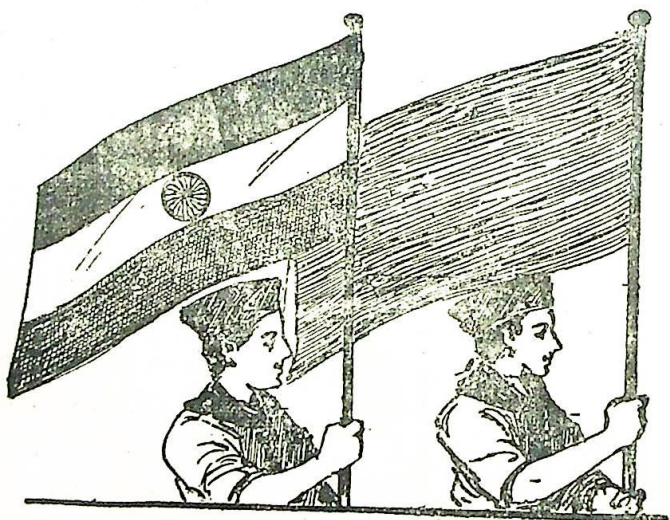
(२) जुलूस में जब किसी दूसरे झण्डे के साथ राष्ट्रीय झण्डा हो तब मार्च करते समय राष्ट्रीय झण्डा दाईं ओर जुलूस का झण्डा बाईं ओर होना चाहिये। जब कोई झण्डों की एक कतार हो तब राष्ट्रीय झण्डे को उनके सामने बीच में होना चाहिये।

३— जब किसी दूसरे झण्डे के साथ राष्ट्रीय झण्डा दीवाल पर

(१८)

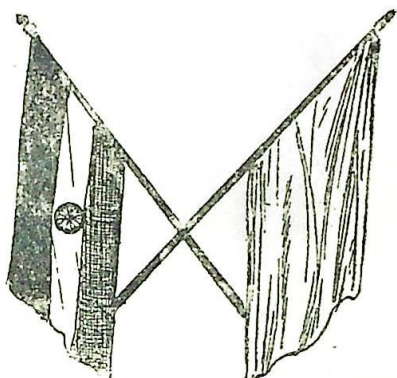
फहराया जाय तो राष्ट्रीय झण्डे को दाहिनी ओर होना चाहिए और उसका दण्ड दूसरे झण्डे के दण्ड के ऊपर होना चाहिये ।

४—जब एक ही स्थान पर कई झण्डे फहरा रहे हों तब राष्ट्रीय झण्डे को सब के बीच में और सबसे ऊँचे दण्ड पर फहराना चाहिए ।

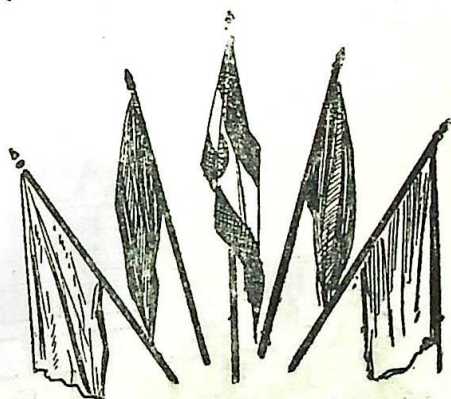


५—जब राष्ट्रीय झण्डा किसी इमारत की खिड़की के बाहर तिरछा करके फहराया जाय तब पूरा झण्डा फहराना चाहिये ।

६—किसी सभा के मंच पर राष्ट्रीय झण्डे को बिना दण्ड फहराना ही है तो वक्ता से ऊँचाई पर लगाना चाहिये जिससे झण्डा साफ दिखाई पड़े ! राष्ट्रीय झण्डे को न तो वक्ता के सामने रखली हुई मेज पर बिछाना चाहिये और न प्लेट फार्म के नीचे लटकाना चाहिये । और यदि मंच



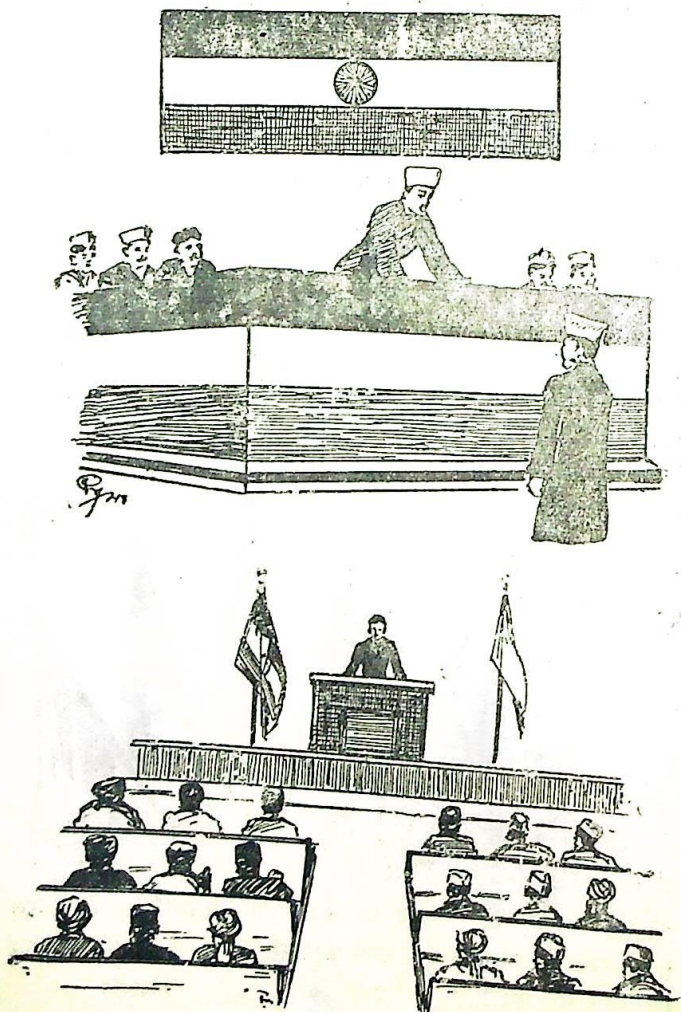
पर झण्डे को दण्ड पर फहराना है तो उसे वक्ता महोदय के दाहिने ओर रखना चाहिये ।



७—किसी मूर्ति पर से पर्दा हटाने की रस्म के समय राष्ट्रीय झण्डे का महत्वपूर्ण स्थान होता है । उस समय झण्डा उचित सम्मान के साथ फहराया जाय झण्डे से मूर्ति पर पर्दा न डाला जाय ।

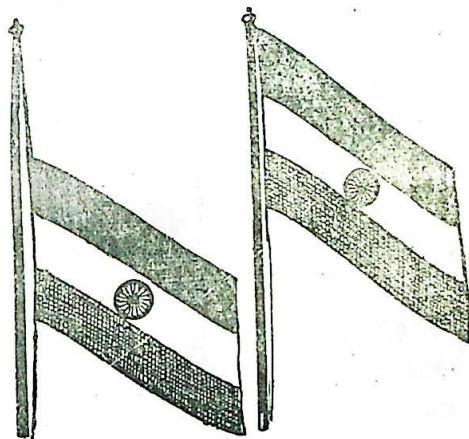
(२०)

—जब शोक प्रकट करने के लिए त्राधा झण्डा का (Half Mast) फहराना हो तो ऐसा करते समय झण्डे की डोर को ऊपर



दंड की ऊँचाई तक खींचना चाहिये। बाद में आधे दंड तक झंडे को नीचे करके बांध देना चाहिये। जब झंडा उतारना हो तो उस समय भी पहले झंडे को ऊपर तक ले जाना चाहिये और फिर बाद में उतारना चाहिये।

९—जब-
किसी राज्य
रियासत या
संस्था का झंडा
राष्ट्रीय झंडे
की रस्सी ही
में फहराना हो
तो राष्ट्रीय झंडे
को ऊपर रखना
चाहिये। जब
पास ही पास



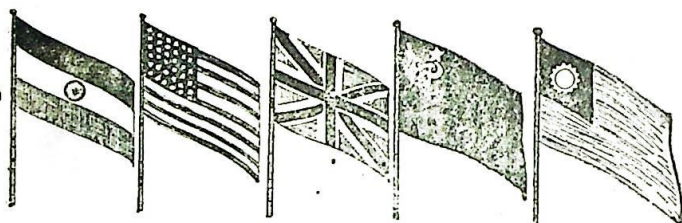
लगे दंडों पर राष्ट्रीय झंडा और दूसरा झंडा फहराना हो तो, राष्ट्रीय झंडे को पहले फहराना चाहिये। कोई दूसरा झंडा राष्ट्रीय झंडे के दाईं ओर या उसी की ऊँचाई के ऊपर नहीं रखना चाहिये।

१०—जब दो या अधिक राष्ट्रों के झंडे एक साथ फहराना हो तो सब झंडों की ऊँचाई को बराबर रखना चाहिये। शान्ति काल में अन्तर्राष्ट्रीय नियम यह है कि एक राष्ट्र का झंडा दूसरे राष्ट्र के झंडे के ऊपर नहीं फहराना चाहिये।

११—जब राष्ट्रीय झंडा दंडा पर फहराना हो तो उसे दीवार पर समानान्तर या लम्बाकार फहराना चाहिए। ऐसा करते समय यह ध्यान में रखना चाहिए कि केसरिया पृथ्वी के समानान्तर दशा में

ऊपर और लम्बाकार दशा में अग्नी दाई और हो ।

यदि किसी विशेष राष्ट्रीय महत्व पर राष्ट्रीय झण्डा सड़क के ऊपर बीच में या दो इमारतों के बीच में लगाना हो तो रस्सी के दोनों किनारों के बीच बीच झण्डा होना चाहिये ।



विभिन्न देशों के झण्डे

१३—किसी अखिल भारतीय राष्ट्रीय नेता को मृत्यु पर उनके सम्मान में उनकी शव शैया राष्ट्रीय झण्डे से ढक सकते हैं । लेकिन शव के अग्नि संस्कार या दफन करने से पहले झण्डे के गौरव के साथ इस प्रकार हटाना चाहिये कि वह जमीन न छुए ।

१४—यदि झण्डे की सजावट में राष्ट्रीय झण्डे के रङ्गों का प्रयोग किसी खास अवसर पर करना हो तो केसरिया रङ्ग को दाहिनी और लम्बाकार दशा में और ऊपर समानान्तर दशा में रखना चाहिए ।

१५—वैसे तो झण्डे को सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक सरकारी तथा उन इमारतों पर जहाँ झण्डा फहराने की अनुमति है तथा नियुक्त स्थायी झण्डे के दण्डों पर ही फहराना चाहिये, किन्तु विशेष अवसरों पर जब कि राष्ट्रीय भावना उत्पन्न करने का विचार हो तो झण्डा रात में भी फहराया जा सकता है ।

भंडा निषेध

भंडे का प्रयोग किस प्रकार किया जाय, इसे भी ध्यान में रखना चाहिये:—

१—राष्ट्रीय भंडे का अपमान किसी प्रकार नहीं होने देना चाहिये।

२—किसी व्यक्ति अथवा वस्तु के सामने राष्ट्रीय भंडे को झुकाना नहीं चाहिये। दल अथवा सेना का भंडा किसी व्यक्ति अथवा वस्तु के सम्मान में झुकाया जा सकता है।

३—भंडा इस प्रकार नहीं पहराना चाहिए कि केसरिया रङ्ग नीचे और हरा रङ्ग ऊपर लग जाय।

४—कोई भी भंडा राष्ट्रीय भंडे के दाहिने नहीं रखना चाहिये।

५—राष्ट्रीय भंडे को जमीन नहीं छूने देना चाहिए और न उसे पानी की सतह में लगने देना चाहिए।

६—राष्ट्रीय भंडे पर सिवाय चक्र के और कोई चिन्ह नहीं बनाना चाहिए।

७—राष्ट्रीय भंडे को किसी चीज के बांधने या बिछाने के काम में नहीं लाना चाहिए।

८—राष्ट्रीय भंडे को इस प्रकार नहीं बांधना चाहिए कि वह आसानी से फट जाय।

९—राष्ट्रीय भंडे को किसी गाड़ी के सामने या बगल में नहीं लगाना चाहिए और न तो उसे नाव या रेलगाड़ी के बगल में टांगना चाहिए। जब मोटर पर राष्ट्रीय भंडा लगाना हो तो भंडे के दंडे को रीट्रियर कैपर पर होना चाहिये।

१०—राष्ट्रीय भंडे से बिजली के तार वगैरह के ढकने का काम न लिया जाय।

११—भंडे को मुका कर या धरतों के सामानान्तर बनाकर नहीं ले जाना चाहिए। वरन् उसे ऊँचा करके इस प्रकार ले जाना चाहिए जैसे कि परेड में ले जाते हैं।

१२—भंडे को किसी पोशाक के काम में नहीं लाना चाहिए। न तो उसकी वर्दी बनाई जाय और न तिरङ्गो किनारेदार गद्दो वा साड़ी बनाई जाय तिरङ्गा निशान, रुमाल, तौलिया और सन्दूक पर भी नहीं लगाना चाहिए।

१३—राष्ट्रीय भंडे पर किसी प्रकार की लिखावट नहीं होना चाहिए।

१४—राष्ट्रीय भंडे का प्रयोग किसी प्रकार के विज्ञापन में नहीं होना चाहिए और न राष्ट्रीय भंडे के दंड में किसी प्रकार का इशतहार लगाया जाय।

१५—राष्ट्रीय भंडे का प्रयोग या उसके रखने का तरीका ऐसा नहीं होना चाहिए कि वह आसानी से खराब हो जाय। इसके अतिरिक्त केन्द्रीय सरकार ने भंडे के प्रयोग के सम्बन्ध में एक आज्ञा जारी की है। इस आज्ञा के अनुसार केन्द्रीय सरकार ने निश्चित किया है कि प्रमुख सरकारी इमारतें आदि अधिकारियों के निवास स्थान पर राष्ट्रीय भंडा प्रतिदिन फहराता रहेगा। हाईकोर्ट, सेक्रेटरियेट, कमिश्नर का दफ्तर, कलकटरी, जेल, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड और म्युनिसिपल बोर्ड देश की सीमा के विशेष स्थानों पर केन्द्रीय तथा प्रांतीय मंत्रियों के निवास स्थानों, चीफ कमिश्नर, विदेशों में हिंद के प्रतिनिधियों, रियासतों के नरेशों और राजप्रमुखों के स्थान पर भी राष्ट्रीय भंडा प्रतिदिन फहराना चाहिए।

गवर्नर जनरल और प्रांतीय गवर्नर के अपने अपने भंडे हैं जो उनके निवास स्थान और मोटरों पर प्रतिदिन फहराते रहेंगे। थल-सेना, जलस्थ-सेना और वायु सेना द्वारा राष्ट्रीय भंडे का प्रयोग सेना के नियमानुसार होगा।

मोटर पर राष्ट्रीय झन्डा लगाने का अधिकार केन्द्रीय तथा प्रान्तीय मन्त्रियों, स्पीकरों, चीफ कमिश्नरों, विदेश के हिन्द प्रतिनिधियों और राज प्रमुखों तक सीमित रहेगा ।

विशेष अवसरों पर जैसे स्वतन्त्रता दिवस, राष्ट्रीय सप्ताह, २६ जनवरी, १५ अगस्त महात्मा गांधी का जन्म दिवस तथा अन्य राष्ट्रीय समारोहों के दिन राष्ट्रीय झन्डे के प्रयोग पर किसी प्रकार की रुकावट नहीं रहेगी ।

उपसंहार

राष्ट्रीय झन्डा हमारे देश की जनता का प्रतीक है । वह हमें स्वतन्त्रता की याद दिलाता है जिसे हमने त्याग और बलिदान से प्राप्त किया है । राष्ट्रीय झन्डे के तीन रंग हमारे राष्ट्रीय चरित्र के आधार हैं । चरित्रबल और आत्मबल का प्रतीक हमारा तिरंगा हमें उन्नति करने के लिए प्रोत्साहित करता है, इसलिए हम सब का कर्तव्य है कि राष्ट्रीय झन्डे के मान और मर्यादा को रक्षा के लिए सावधान रहें और इसके लिए यह कार्य करें जिससे देश का सम्मान संसार के सभी देशों में बढ़े ।

सहायक पुस्तकों की सूची

हैंड बुक फ़ार स्काउट मास्टर्स

ब्वाय स्काउट्स ग्राव अमेरिका

हैंड बुक फ़ार ब्वायज़

ब्वाय स्काउट्स ग्राव अमेरिका

स्काउट ड्रिल—पंडित श्रीराम बा नपेयी

वालोपयोगी पुस्तकें

				मूल्य
१.	आजकल	...	...	₹ 1/-
२.	युगसन्देश	...	...	₹ 1/-
३.	काठ का घोड़ा	...	...	₹ 1/-
४.	ननिहाल को	...	...	₹ 1/-
५.	मुन्तू की चिट्ठी	...	...	₹ 1/-
६.	मेरी चिट्ठी	...	...	₹ 1/-
७.	नट का खेल	...	...	₹ 1/-
८.	हमारे सोलह गीत और वारह सिंहनाद	...	...	₹ 1/-
९.	ध्रुवपद शिक्षण	...	...	₹ 1 1/2
१०.	कैम्पफायर	...	...	₹ 1
११.	खेल	...	...	₹ 2 1/2
१२.	आग बुझाने का हुनर	...	...	₹ 1 1/2
१३.	भंडे का महत्व	...	...	₹ 1 1/2

अन्य पुस्तकों के लिये सूचीपत्र लिखकर मंगाये ।

न्यू लिटरेचर : जीरोरोड : इलाहाबाद